माता–पिता और बालक संबंध एवं बाल विकास पर माता–पिता की आर्थिक स्थिति का प्रभाव

संजीव कुमार
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग
महंत दर्शन दास महिला कॉलेज
मुजफ्फरपुर

सारांश

बाल–विकास का जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। बाल विकास की श्रृंखला में व्यक्तित्व के हर पहलू का क्रमशः निर्माण होता जाता है। व्यक्तित्व निर्माण के रास्ते में माता–पिता प्रथम तत्व होते हैं जिससे शिशु को जीवन का प्रथम अनुभव मिलना शुरू होता है। बच्चों में जन्म से साथ में शारीरिक विकास की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है, साथ ही मानसिक, क्रियात्मक, ज्ञानात्मक, संवेगात्मक, शिक्षा एवं चरित्र का विकास भी प्रारंभ हो जाता है जो आगे चलकर संपूर्ण व्यक्तित्व विकास के रूप में प्रकट होता है। बच्चे माता–पिता की विशेषताओं से प्रभावित होते हैं और उनकी शारीरिक संरचना, स्वास्थ्य, लिंग, क्रियाशीलता, समग्रता, अभिरुचि का प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। व्यक्तित्व निर्माण में प्रारंभिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, समाज के विभिन्न पहलुओं तथा कुशल अभिभावकत्व प्रणाली को ही महत्वपूर्ण माना गया है। साथ ही परिवार की शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति भी बच्चे के विकास पर गहरा प्रभाव डालते हैं। बच्चों के विकास पर परिवार के आकार के साथ–साथ माता–पिता के व्यवसाय एवं उनकी आर्थिक स्थिति का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। भारत जैसे देश में बढ़ती जनसंख्या ने एक समस्या का रूप धारण कर लिया है और खासकर तब जबकि दो–तिहाई जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीती है। कोई भी समाज आर्थिक आधार पर सामान्यतः तीन भागों में बँटा होता है। भारतीय समाज भी आर्थिक दृष्टिकोण से अति प्राचीन समय से ही तीन हिस्सों में बँटा हुआ है – उच्च आय वर्ग, मध्यम आय वर्ग तथा निम्न आय वर्ग। उच्च, मध्यम एवं निम्न आय वर्गों के माता–पिता एवं उनके बच्चों के बीच के संबंध को जानने के लिए शैक्षणिक दृष्टिकोण से प्राप्त प्राप्तांकों का तुलनात्मक विवेचन किया गया।

महत्त्वपूर्ण शब्दः बाल विकास, चरित्र–निर्माण, आर्थिक प्रभाव, मापन, परंपरागत, रूढ़िवादिता, दृष्टिकोण।

बाल विकास की एक लंबी श्रृंखला होती है। इसी श्रृंखला में व्यक्तित्व के हर पहलू का क्रमशः निर्माण होता जाता है। शैशवावस्था की किस घटना ने चरित्र–निर्माण में कौन सा प्रभाव डाला और उससे भावी जीवन की लंबी यात्रा पथ में कहाँ कौन सा मोड़ आया यह जानना अत्यंत कठिन है। इस व्यक्तित्व निर्माण के रास्ते में माता–पिता प्रथम तत्व होते हैं जिससे शिशु को जीवन का प्रथम अनुभव मिलना शुरू होता है। यह क्रम परिपक्वता तक चलता रहता है।

बाल–विकास का जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन काल में बालक के सर्वांगीण विकास हेतु गुरु आश्रम का सहारा लिया जाता था। लेकिन इस आधुनिक युग में प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों के विकास के लिए सतत् प्रयत्नशील रहते हैं। बच्चों में जन्म से साथ में शारीरिक विकास की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है, साथ ही मानसिक, क्रियात्मक, ज्ञानात्मक, संवेगात्मक, शिक्षा एवं चरित्र का विकास भी प्रारंभ हो जाता है जो आगे चलकर संपूर्ण व्यक्तित्व विकास के रूप में प्रकट होता है। इन सारे विकासों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से माता–पिता की मनोवृति का निश्चित रूप से प्रभाव पड़ता है।

बाल्यावस्था जीवन की सबसे अनमोल अवस्था होती है। प्रारंभिक काल में बच्चों को किसी भी चीज की जानकारी स्पष्ट रूप से नहीं होती है। वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु माता–पिता पर निर्भर करते हैं। माता–पिता का प्रेम और वात्सल्य बच्चों के विकास पर अनुकूल प्रभाव डालता है। बच्चे माता–पिता की विशेषताओं से प्रभावित होते हैं और उनकी शारीरिक संरचना, स्वास्थ्य, लिंग, क्रियाशीलता, समग्रता, अभिरुचि का प्रत्यक्ष प्रभाव बच्चों पर पड़ता है।

जॉन आम्स कोमेनोयस (1560–1670) ने *इन द ग्रेट डेडीकेटेड* में विकास की अवस्था को चार भागों में बाँटा है। प्रत्येक अवस्था की अवधि छः वर्ष रखी गई। नवजात शिशु काल, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, युवावस्था आदि। विलियम जेम्स, मैकमूलर, ड्रेभर, बर्ट आदि मनोवैज्ञानिकों ने वंश परंपरा के क्रम में उस में पाए जाने वाले व्यवहार की व्याख्या की है। जी. स्टेनले हॉल ने बाल विकास आंदोलन का प्रारंभ अमेरिका में किया जिसके आधार पर आज उन्हें इस आंदोलन के पिता या जनक के रूप में जाना जाता हैं। इस संबंध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा किया गया अध्ययन महत्वपूर्ण है। पियगैट वेर्ट (1918), हेगलीट (1930), मैकार्थी, हॉल ने बच्चों के विकास पर पड़ने वाले विभिन्न कारकों के प्रभावों का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है।

वाटसन (1919) ने कहा था कि बच्चा जब जन्म लेता है तो वह अपने माथे पर लिखकर नहीं आता है कि वह बेईमान है या ईमानदार, धर्मात्मा है या पापी। वह यह सब कुछ इस दुनिया में कदम रखने के बाद अपने परिवार से, अपने पड़ोस से, अपने आसपास के पूरे माहौल से क्रमशः सीखता है और अपने आप को विकसित करता है। बाल मन–मस्तिष्क गीली मिट्टी की तरह होता है। उसे जैसा भी आकार दिया जाय वह वही आकार धारण कर लेगा। हम उसे अच्छा आदर्श नागरिक भी बना सकते हैं और बुरे से बुरे कर्म करने वाला अपराधी भी। वाटसन के इस चिंतन के बाद से मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों एवं जिज्ञासु माता–पिता का ध्यान बाल–पोषण प्रणाली की ओर गया और इसे अधिक से अधिक नियंत्रित और वैज्ञानिक बनाने की दिशा में प्रयास होने लगा। अब सभी मानने लगे हैं कि एक युवा अपने शैशव स्मृतियों को कभी भूलता नहीं है और ये स्मृतियाँ ही उसके भावी जीवन का पथ निर्माण करती है। इस संदर्भ में माता–पिता के पालन–पोषण प्रणाली को जीवन निर्माण का प्रथम एवं अंतिम सोपान कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी।

व्यक्तित्व निर्माण में प्रारंभिक वातावरण, सामाजिक वातावरण, समाज के विभिन्न पहलुओं तथा कुशल अभिभावकत्व प्रणाली

को ही महत्वपूर्ण माना गया है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों की यह मान्यता है कि बच्चों के देखभाल का प्रारंभ घर से ही होता है। घर का वातावरण यदि आकर्षक है तो बच्चा अधिक समय घर में बिताना चाहता है लेकिन यदि वह घर में ही उपेक्षित है तो वह उसकी क्षतिपूर्ति करने बाहर की दुनिया में कदम रखता है जहाँ वह कुसंगति में पड़कर छोटे–मोटे आपराध करने लगता है और यही छोटी–मोटी भूलें उसे हमेशा के लिए अपराधी बना देती है। आगे चल कर यह एक गंभीर समस्या का रूप ले लेती है जो न केवल व्यक्तिगत समस्या होती है वरन् एक सामाजिक समस्या बन जाती है। अतः इन समस्याओं को सुलझाने में सरकार, समाजशास्त्री तथा माता–पिता प्रयत्नशील रहते हैं लेकिन ये कोशिशें विफल ही साबित होती हैं। इस कटु सत्य से कोई भी इनकार नहीं कर सकता है कि बालक में अच्छी या बुरी प्रवृत्ति का होना उसके पारिवारिक वातावरण पर ही निर्भर करता है। माता–पिता और भाई–बहनों का व्यवहार बच्चों में चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। साथ ही परिवार की शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति भी बच्चे के विकास पर गहरा प्रभाव डालते हैं।

अत्याधुनिक मनोवैज्ञानिक विचारधारा के प्रवर्तकों में अग्रणी एरिक फ्रॉम (1947) की यह मान्यता है कि बच्चा समाज में ही जन्म लेता और विकसित होता है। इस क्रम में वह स्कूल, पड़ोस, दोस्त इत्यादि के संपर्क में आता है और उन्हीं के अनुरूप अपने को बनाता या बिगाड़ता है। बच्चा थोड़े से पैसे प्राप्त करके इस लोभ में अपराध की ओर उन्मुख हो जाता है। इस संदर्भ में निर्धनता को भी एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है जो बच्चों के चरित्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। एक निर्धन बच्चा जब अपने साथियों या पड़ोसियों को बढ़िया खाते, अच्छा पहनते और ऐशो–आराम की जिंदगी बिताते देखता है तो यह सर्वथा स्वभाविक है कि उसके मन में भी ऐसा ही जीवन जीने की इच्छा बलवती होगी। लेकिन जब वह सामान्य ढंग से इन इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाता तो इन इच्छाओं की तृप्ति के लिए वह अनेक प्रकार के गलत रास्तों के जरिए अपने दबी इच्छाओं को पूरा करने का प्रयास करता है। निम्न वर्गीय परिवारों में बच्चों की अधिक संख्या भी इस मनोवृति के पनपने का कारण है क्योंकि अधिक बच्चों की देखभाल करना किसी भी माता–पिता के लिए संभव नहीं हो पाता है। भारत जैसे देश में बढ़ती जनसंख्या ने एक समस्या का रूप धारण कर लिया है और खासकर तब जबकि दो–तिहाई जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे जीती है। इस परिस्थिति में ऐसे परिवार चार, पाँच एवं उससे अधिक बच्चों के समुचित लालन–पालन की जिम्मेदारी निभा पाने में असमर्थ होते हैं।

माता–पिता एवं बालक के संबंधों एवं बालक के विकास पर परिवार के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का काफी प्रभाव पड़ता है। मध्यम वर्गीय माता–पिता को अपने बच्चों से अनेक प्रकार की अपेक्षाएँ होती है। दोनों के बीच सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव निश्चित रूप से पाया गया है। बच्चों के विकास पर परिवार के आकार के साथ–साथ माता–पिता के व्यवसाय एवं उनकी आर्थिक स्थिति का भी गहरा प्रभाव पड़ता है।

कोई भी समाज आर्थिक आधार पर सामान्यतः तीन भागों में बँटा होता है। भारतीय समाज भी आर्थिक दृष्टिकोण से अति प्राचीन समय से ही तीन हिस्सों में बँटा हुआ है – उच्च आय वर्ग, मध्यम आय वर्ग तथा निम्न आय वर्ग। भारतवर्ष में इन तीनों आय वर्गों के लोग समाज में एक साथ रहते आए हैं लेकिन उनकी मान्यताएँ, व्यवहार प्रणाली, रहन–सहन, खान–पान, रीति–रिवाज तथा विचार–प्रणाली भिन्न–भिन्न रहते हैं। इन तीनों ही वर्गों की शिक्षा–दीक्षा भी स्पष्टतया पृथक–पृथक रही है। इसके अतिरिक्त तीनों वर्गों की सुविधाएँ भी समान नहीं रही हैं। निम्न आय वर्ग निश्चित रूप से समाज में वन्चना की पीड़ा झेलता रहा है। निम्न आय वर्ग सामाजिक वन्चना के कारण अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई तथा भरण–पोषण की समुचित व्यवस्था भी नहीं कर पाता है। अतः यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इन तीनों वर्गों की सामाजिक समस्याओं के प्रति भी दृष्टिकोण पृथक–पृथक होंगे। साथ ही आधुनिक समाजशास्त्रियों का यह भी विचार है कि संभवत वर्तमान समस्या बालक–अभिभावक संबंध का ही प्रतिफल है। इस संदर्भ में यह परिकल्पना स्थापित की जाती है कि उच्च आय वर्ग के माता–पिता एवं बालकों में मध्यम एवं निम्न आय वर्ग के माता–पिता एवं बालकों की अपेक्षा अधिक अनुकूल संबंध पाया जाएगा और उन बालकों का समग्र विकास होगा।

माता–पिता के आर्थिक स्थिति का मापन :

अध्ययन के लिए उपलब्ध प्रयोज्यों के माता–पिता या अभिभावक की आर्थिक स्थिति का मापन करने के लिए व्यक्तिगत सूचना–पत्र प्रेषित किया गया जिसमें प्रयोज्यों से उनकी आर्थिक स्थिति से संबंधित प्रश्न पूछ कर उनसे जानकारी प्राप्त की गई। इस प्रक्रिया से प्रयोज्यों के माता–पिता अथवा अभिभावक की आर्थिक स्थिति का मापन किया गया। अध्ययन के लिए मुजफ्फरपुर जिला अन्तर्गत आने वाले परिवार के बच्चों को सम्मिलित किया गया। प्रतिदर्श के रूप में तीन सौ बच्चों को सम्मिलित कर अध्ययन किया गया है जिनका वर्गीकरण उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग के रूप में किया गया। उपकरण एवं मापनी के रूप में व्यक्तिगत सूचना पत्र का प्रयोग किया गया जिसमें तीनों ही वर्गों की आर्थिक स्थिति के आधार पर जानकारी प्राप्त की गई।

प्रयोज्यों के परिवारिक आर्थिक स्थिति के मापन का यह उद्देश्य था कि वर्तमान समाज में संपन्न परिवारों के सदस्यों के दृष्टिकोण, व्यवहार प्रणाली तथा व्यक्तिगत संरचना निम्न परिवार के सदस्यों से सर्वथा भिन्न हुआ करता है। संपन्न परिवार के सदस्य सामाजिक समस्याओं की अद्यतन जानकारी रखते हैं और उसके अनुसार अपने व्यवहार, अपनी प्रेरणाओं, आकांक्षाओं को निर्मित करते रहते हैं। दूसरी ओर निर्धन परिवार के सदस्य आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी निर्धनता के परिवेश से दूर नहीं हो पाते हैं। किसी भी समस्या के प्रति उनकी निजी मनोवृति तथा व्यवहार प्रणाली परंपरागत, रूढ़िवादिता एवं संकीर्ण विचारों से घिरा होता है। परिणाम स्वरूप, देखा जाए तो उनका दृष्टिकोण व व्यवहार प्रणाली उससे प्रभावित होते हैं। अतः ऐसी संभावना की जाती है कि सामाजिक समस्याओं के प्रति उनकी निजी मनोवृति भी परम्परागत रहती है। अतः वर्तमान समस्या के प्रति भी इस तत्व का स्पष्ट प्रभाव होने की संभावना है। माता–पिता, अभिभावक एवं बच्चों के बीच जो आपसी संबंध विकसित होता हैं उसका प्रभाव निश्चित रूप से उनके समायोजन की दशा का निर्धारक होता है। बच्चों के विकास में माता–पिता की अहम भूमिका पायी जाती है। आर्थिक स्थिति का प्रभाव किस रूप में होता है इसे देखने के लिए व्यक्तिगत सूचनाओं में इसे समाहित किया गया है।

माता–पिता की आय एवं आर्थिक दृष्टिकोण से संबंधों का तुलनात्मक विश्लेषण करने तथा विभिन्न आय वर्गों को निर्धारित करने के लिए 300 माता–पिता एवं उनके बालकों का शैक्षणिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया। प्रतिदर्श संख्या 300 पर व्यक्तिगत

सूचना–पत्र में एक प्रश्नावली देकर उसके आधार पर प्रतिदर्श को तीन वर्गों में विभक्त कर दिया गया – उच्च आय वर्ग, मध्यम आय वर्ग एवं निम्न आय वर्ग। आय वर्ग के विभाजन हेतु माता–पिता के मासिक आय को आधार बनाते हुए विभाजक सीमाएँ क्रमशः उच्च आय वर्ग ₹20,000 एवं उससे ऊपर, मध्यम आय वर्ग ₹10,000 से ₹20,000 के बीच एवं निम्न आय वर्ग ₹3000 एवं उससे ऊपर की गई।

इन तीनों ही आय वर्गों के माता–पिता एवं उनके बच्चे एवं बच्चियों के बीच शैक्षणिक दृष्टिकोण से संबंध पर पड़ने वाले प्रभाव के संबंध में स्थापित प्राक्कल्पना की चर्चा उपर की गई है। उच्च आय वर्ग में मध्यम एवं निम्न की अपेक्षा अधिक अनुकूल माता–पिता एवं बालक संबंध पाया जायगा। प्रतिदर्श में वर्णित 300 माता–पिता एवं उनके बच्चे–बच्चियों से संबंधित तीनों ही आय वर्गों को क्रमशः उच्च आय समूह, मध्यम आय समूह एवं निम्न आय समूह माना गया। तीनों ही आय समूहों में प्रयोज्यों की संख्या क्रमशः 107, 112, 81 प्राप्त हुआ। इन तीनों ही से संबंधित अध्ययन कर प्राप्तांकों का वितरण तथा उनके मध्यमान, प्रामाणिक विचलन तथा टी. अनुपात का तुलनात्मक विवेचन सारणी संख्या–1 एवं 2 में उल्लिखित है।

सारणी संख्या–1

उच्च, मध्यम एवं निम्न आय वर्गों के माता–पिता एवं उनके बच्चों के बीच संबंध के लिए शैक्षणिक दृष्टिकोण से प्राप्त प्राप्तांकों का तुलनात्मक विवेचनः–

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी अनुपात		सार्थकता स्तर
(क) उच्च आय समूह	100	35.85	10.40	क–ख	4.65	0.01
(ख) मध्यम आय समूह	100	45.15	16.55	ख–ग	1.16	असार्थक
(ग) निम्न आय समूह	100	42.40	17.01	क–ग	3.30	0.01

सारणी संख्या–1 में वर्णित तीनों ही आय समूहों के सांख्यिकीय परिणामों के तुलनात्मक विवेचन से यह स्पष्ट हो रहा है कि उच्च आर्थिक समूह के माता–पिता एवं उनके बच्चों के बीच शैक्षिक दृष्टिकोण से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 35.85, मध्यम समूह से प्राप्त मध्यमान 45.15 और निम्न समूह से प्राप्त मध्यमान 42.40 प्राप्त हुआ है। तीनों ही समूहों के पृथक–पृथक तुलना से यह स्पष्ट होता है कि उच्च एवं निम्न आय समूह के बीच मध्यमानों का टी. अनुपात 3.30 पाया गया है जो प्राक्कल्पना के अनुरूप 0.01 स्तर पर सार्थक सत्यापित हो रहा है। उच्च एवं मध्यम आय समूह के बीच मध्यमानों का टी. अनुपात 4.65 पाया गया है जो प्राक्कल्पना के विपरीत दिशा में सत्यापित हो रहा है। मध्यम एवं निम्न आय समूह के बीच मध्यमानों का टी. अनुपात 2.75 पाया गया है जो प्राक्कल्पना के अनुरूप 0.01 स्तर पर सार्थक सत्यापित हो हो रहा है।

आय के आधार पर माता–पिता के जो तीन समूह निर्धारित किये गये उनके पृथक–पृथक शिक्षा में प्रगतिरोध एवं माता–पिता की मनोवृति प्राप्तांकों के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता एवं प्राप्तांकों की अन्तक्रिर्या को जाँचने के लिए प्रसरण विश्लेषण विधि का चालन किया गया जिसका परिणाम सारिणी संख्या दो में उल्लिखित है।

सारिणी संख्या–2

प्रसरण के श्रोत	डी. एफ.	वर्गों का योग	प्रसरण	एफ. अनुपात	सार्थकता स्तर
लघु समूह प्रसरण	2	400323.46	200161.73	53.73	0.01
बृहत समूह प्रसरण	297	1106503.8	3725.60		

माता–पिता एवं उनके बच्चों एवं बच्चियों के साथ शैक्षिक संबंध का उच्च एवं मध्यम वर्गों के साथ निम्न वर्ग का तुलनात्मक विवेचन करने पर किसी भी तरह का संबंध स्पष्ट नहीं हो पाता है।

उपर्युक्त तीनों ही आय समूहों के माता–पिता एवं उनके बच्चों के शैक्षिक दृष्टिकोण से संबंध का अध्ययन कर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ हैः–

(क) तृतीय अध्याय में की गई षष्टम् प्राक्कल्पना सत्यापित हो रही है।

(ख) यह प्रमाणित होता है कि मध्यम आय वर्ग के माता–पिता अपने बच्चियों की शिक्षा के प्रति निम्न आय वर्ग के माता–पिता के अपेक्षा अधिक जागरूक दिख रहे हैं।

(ग) मध्यम आय वर्ग में उच्च और निम्न आय वर्ग की अपेक्षा बच्चियों से संबंधित मध्यमान अधिक पाए गए हैं। जबकि बच्चों से संबंधित मध्यमान भी उसी अनुपात में पाए गए हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि उच्च और मध्यम वर्ग के माता–पिता शैक्षिक दृष्टिकोण से अपने बच्चों के साथ अधिक अनुकूल संबंध रखते हैं जिसका उनके शैक्षिक विकास पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

References

Watson, J. B.: Conditioned Emotional Restrictions, Journal of Experimental Psychology, 3, 1-14, 1920.

Horney, Karen: *Our Inner Conflicts*, W. W. Norton & Co Ltd, 1945

Fromm, Erich (1947): *Man for himself, An Inquiry into the Psychology of Ethics*, Henry Holt & Company Inc (Verlag).

Gessel, A.: *Child Development*, Harper Brothers, New York, 1940.

Kuppuswamy, B.: A text - Book of Child Behaviour and Development, Vikas Publishing House, Delhi, 1983.

Hall, G. Stanley: Adolescence, D. Appleton and Company, New York.

Arnold, D. H., and Doctoroff, G. L. (2003). The early education of socioeconomically disadvantaged children. *Annu. Rev. Psychol.* 54, 517–545.

Berkowitz, R., Moore, H., Astor, R. A., and Benbenishty, R. (2017). A research synthesis of the associations between socioeconomic background, inequality, school climate, and academic achievement. *Rev. Educ. Res.* 87, 425–469.

Lareau, A. (2011). *Unequal childhoods: class, race, and family life.* Berkeley, CA: University of California Press.

White KR. 1982. The relation between socioeconomic status and academic achievement. Psychological Bulletin, 91, 61-81.

UNESCO, (2003). Education For All Global Monitoring Report 2003/4: Gender and Education to All The leap to Equality. Paris: UNESCO.

UNESCO, (2008). Education for All by 2015: Will we make it? Paris: UNESCO.

UNESCO, (2010). Education For All Global Monitoring Report 2010: Reaching the Marginalized. Paris: UNESCO.

Pradhan, B. K. and Subramanian, A. (2000). 'Education, Openness and the Poor.' Discussion Paper 14. New Delhi: NCAER (National Council for Applied Economic Research).